दिल्ली सल्तनत की सामाजिक संरचना

मुसलमानों के भारत आने से पहले भी भारतीय समाज विभिन्न वर्गों में बंटा हुआ था। भारत का सबसे अधिक सम्मानित वर्ग विदेशी मुसलमानों का था। राज्य के सभी बड़े-बड़े पद इस पद के व्यक्तियों के लिए सुरक्षित रखते जाते थे, बड़ी-बड़ी जागीरें उन्हें प्राप्त होती थीं तथा शासन और समाज में उनका स्थान श्रेष्ठ था।

समाज का दूसरा वर्ग भारतीय मुसलमानों का था। यह वे मुसलमान थे जो हिन्दू से मुसलमान बने थे। ~~अथवा~~ धर्मपरिवर्तित मुसलमानों की संतान थी। भारतीय मुसलमानों को शासन और समाज में बराबर स्थान नहीं दिया गया।

धर्म, शिक्षा और जीविका के आधार पर भी मुसलमानों के विभिन्न वर्ग थे। शिया और सुन्नियों में अंतर था, सैनिक और विद्वानों में अंतर था तथा धार्मिक कृत्यों को करने वाला उलेमा वर्ग इन सबसे पृथक था। मुस्लिम समाज का निम्नतर स्तर शिल्पी, दुकानदार, क्लर्क तथा छोटे व्यापारियों से मिलकर बना था।

भारतीय समाज का बहुसंख्यक वर्ग हिन्दुओं का था। हिन्दू समाज जाति व्यवस्था के कारण पहले से ही विभिन्न वर्गों में बंटा हुआ था। मुसलमानों के आने से अपने समाज की सुरक्षा के लिए हिन्दुओं ने जाति बंधन और भी कठोर कर दिए जिसके कारण विभिन्न नवीन उप-जातियों का निर्माण हुआ। ऊँच-नीच

की भावना और व्यवसाय और निवास-स्थान के आधार को लेकर विभिन्न उपजातियाँ बन गई जिनमें परस्पर खान-पान और विवाह संबंध संभव न थे। हिन्दुओं में अस्पृश्यता, बाल-प्रथा, धर्म के लिए आत्मघात करना आदि कुरीतियाँ थीं।

सम्पूर्ण दिल्ली सल्तनत के युग में हिन्दुओं के साथ जिम्मियों जैसा व्यवहार किया गया। लेकिन कुछ विभाग इनके अन्तर्गत थे, जैसे लगान विभाग, हिन्दू व्यापारी, कारीगर, कृषक आदि। आवश्यकता अनुसार उन्हें सैनिक के रूप में भी भर्ती किया जाता था। लेकिन हिन्दू समाज की स्थिति संतोषजनक नहीं थी।

2. दास प्रथा

समाज में दास प्रथा प्रचलित थी। हिन्दू और मुसलमान दोनों इन्हें रखते थे। गुलाम बाजार में बेचे और खरीदे जाते थे। इनके जीवन और सम्पत्ति पर उनके मालिकों का पूर्ण अधिकार होता था। मुसलमान दासों की स्थिति हिन्दू दासों की अपेक्षा अधिक अच्छी थी। अनेक दास राज्य के बड़े-बड़े पद को प्राप्त किए थे।

3. स्त्रियों की स्थिति

समाज में स्त्रियों की दशा में गिरावट आने लगी थी।

यद्यपि हिन्दू स्त्रियों का परिवार में सम्मान था, वे शिक्षा प्राप्त करती थीं, धार्मिक कार्यों में भाग लेती थीं। अनेक स्त्रियाँ शास्त्र-विद्या और विद्या में कुशल हुईं, परन्तु उनकी सामाजिक स्थिति निम्न हो गई और वे कई नवीन कुप्रथाओं से पीड़ित हो गईं। सती प्रथा का प्रचलन हो चुका था। बाल-विवाह और पर्दा प्रथा आरंभ हो गए थे।

मुस्लिम समाज में भी स्त्रियों की स्थिति अच्छी न थी। बहु-विवाह का प्रचलन था। पर्दा-प्रथा अत्यधिक कठोर थी और उनमें शिक्षा का प्रसार भी कम था। लेकिन कुछ अन्य प्रकार से अच्छी स्थिति में थीं। वे विधवा होने पर पुनर्विवाह कर सकती थीं, तलाक दे सकती थीं, उनमें सती प्रथा नहीं थी और उन्हें अपने माँ-बाप की सम्पत्ति में से हिस्सा लेने का अधिकार था।

A - खान-पान, वेश-भूषा एवं मनोरंजन के साधन -

भोजन की दृष्टि से हिन्दू प्रायः मांस का प्रयोग नहीं करते थे जबकि मुसलमान माँसाहारी थे। मुसलमानों में सूफी और उनसे प्रभावित व्यक्ति माँस नहीं खाते थे अन्यथा सभी मुसलमान मांसाहारी थे। कुरान के अनुसार शराब पीना वर्जित है परंतु हिंदू और मुसलमान दोनों में शराब और अफीम दोनों का प्रयोग स्वच्छन्दता से किया जाता था।

वस्त्र, वेश-भूषा और गहने पहनने में प्रगति हुई थी। इस दौर में हिन्दू और मुसलमानों ने एक दूसरे से बहुत कुछ सीखा। व्यक्ति विभिन्न रंगों के कपड़े, सूती, रेशमी तथा ऊनी सभी प्रकार के वस्त्र का प्रयोग करते थे। आभूषण पहनने का शौक हिन्दू और मुसलमान दोनों में था। सोना, चाँदी जवाहरात आदि सभी का प्रयोग आभूषण बनाने के लिए किया जाता था।

मनोरंजन के लिए खेल-कूद, द्वन्द्व-युद्ध, शिकार, चौपड़, पशु-पक्षियों के युद्ध, चौगान (पोलो) आदि थे। इसके अतिरिक्त हिन्दू और मुसलमानों के विभिन्न त्यौहार और उत्सव भी मनोरंजन के साधन थे। हिन्दू होली, दीवाली, बसन्त आदि त्यौहार को मनाते थे और मुसलमान ईद, शबबेरात, नौरोज आदि मनाते थे।

अधिकांश सुल्तानों तथा उलेमाओं की धार्मिक असहिष्णुता के होते हुए भी हिन्दू और मुसलमान परिस्थितियों और व्यावहारिकता के कारण एक-दूसरे के सम्पर्क में आ रहे थे।

लेकिन हिन्दू राजनीतिक पराजय और समाज में असम्मानित होने के कारण आत्मगौरव, उदारता और प्रगति की चेष्टा से विमुख हो गए। क्योंकि मुसलमान समाज में विशेष अधिकारों का उपभोग करने के कारण अहंकारी और अकर्मण्य बन गया। इस कारण दिल्ली सल्तनत का युग सामाजिक परिवर्तनों का तो था, परन्तु प्रगति का न होकर गिरावट का था।

5

हिन्दू और मुसलमानों के पारस्परिक संबंधों का प्रभाव —

(i) मुसलमानों का हिन्दू समाज पर प्रभाव —

मुसलमानों के सम्पर्क में आने से हिन्दू समाज में स्त्रियों से सम्बन्धित कुछ सामाजिक कुरीतियों में वृद्धि हुई। हिन्दू सामन्तों ने बहु विवाह की परिपाटी को अपना लिया। धनवान हिन्दू बड़ी संख्या में स्त्री और पुरुष दास रखने आरंभ कर दिए। उन्होंने मुसलमानों के वेश भूषा, आभूषण और रीति-रिवाज अपना लिए। हिन्दुओं की जाति व्यवस्था और नैतिक आचरण पहले की अपेक्षा अधिक कठोर हो गए। उनका नैतिक पतन हो गया।

हिन्दुओं का मुस्लिम समाज पर प्रभाव —

हिन्दुओं के सम्पर्क से मुस्लिम समाज भी प्रभावित हुआ। उनमें भी हिन्दू-जाति-प्रथा की तरह सामाजिक अन्तर और वर्गीकरण व्याप्त हो गया। दिल्ली सुल्तानों के दरबार के कई रीति-रिवाज हिन्दुओं से ग्रहण किए गए। मुसलमानों में अकीका और बिसमिल्लाह के रिवाज प्राय: उसी तरह मनाए जाने लगे जैसे कि हिन्दुओं में मुण्डन और उपनयन। दुल्हन को सजाने की प्रथा हफ्त-तौ-गूह उसी प्रकार बन गई जैसे कि हिन्दुओं में सोलह-श्रृंगार की प्रथा। मुसलमानों में शबे-ए-बारात का त्यौहार हिन्दुओं के शिवरात्रि के

के जीवन को गंभीर [illegible] बनाया।

हिन्दु और मुसलमान संस्कृति का समन्वय

हिन्दु और मुसलमानों दोनों ने एक दूसरे के समाज को प्रभावित किया परन्तु दोनों का अस्तित्व स्वतंत्र रहा।

तब भी हिन्दु और मुसलमान संस्कृतियों के समन्वय से एक नयी संस्कृति का निर्माण हुआ जिससे भारतीय मुस्लिम संस्कृति के नाम से पुकारा गया। भक्ति मार्ग के कई संतों ने हिन्दु और इस्लाम धर्म की कुछ अच्छाईयों को अपनाया और उन्हें अपने उपदेशों द्वारा जन-समुदाय में फैलाया। संतो एवं पीरों के दरगाह दोनों के लिए पूजनीय बन गए। अनेक संस्कृत के ग्रंथों का फारसी में अनुवाद किया गया। अनेक हिन्दु विद्वान फारसी में अनेक ग्रंथ लिखे। मुसलमान विद्वानों जैसे अमीर खुसरो और मलिक मुहम्मद जायसी ने हिन्दु समाज, संस्कृति और धर्म के बारे में हिन्दी में लिखा। हिन्दु और मुसलमान संस्कृतियों का समन्वय ललित कलाओं में और भी स्पष्ट दिखाई देता है। गायन कला में सितार फारस के तम्बूरा और हिन्दुओं की वीणा के मिश्रण का परिणाम है। इसी प्रकार तबला हिन्दुओं के मृदंग का मुसलमानों द्वारा बदला हुआ एक स्वरूप है। यह हिन्दु और मुसलमान संस्कृति के समन्वय का परिणाम थी, यद्यपि यह संस्कृति मुख्यतया दरबार तथा उच्च वर्गों और उसके परिणामस्वरूप नगरों तक ही सीमित रही।